संपर्क

कुमाऊँ विश्वविद्यालय की एक सामाजिक पहल

संस्कृत विभाग कुमाऊँ विश्विद्यालय नैनीताल की ओर से संचालित इस पंचदिवसीय ऑनलाइन कोर्स का उद्देश्य प्रतिभागियों को संस्कृत भाषा के संरक्षण के लिये प्रोत्साहित करना तथा उसके विकास के लिये जागरुक करना है।

संस्कृत भाषा के ज्ञान से आजीविका

भारतीय भाषाओं में संस्कृत भाषा सबकी जननी भाषा रही है। यह देववाणी सुरभारती, गीर्वाणगिरा, देवभाषा, गीर्वाणवाणी इत्यादि अनेक नामों से सुसज्जित की जाती रही है। आज आधुनिकता के परिपेक्ष्य में संस्कृत की स्थिति तथा इसको पढ़ने वाले छात्रों के समक्ष रोजगार की स्थिति का परिणाम अच्छा नहीं है। यह धारणा तथ्यहीन होने के साथ–साथ समाज की अपरिपकृता का उदाहरण भी है। संस्कृत भाषा एवं विषय के अध्ययन के पश्चात् युवाओं के लिए रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध है, जिसके बारे में विद्यार्थियों और अभिभावओं को जानकारी होना अति आवश्यक है। तभी वे संस्कृत भाषा के अध्ययन की ओर अभिमुख होंगे। इसी दृष्टि से संस्कृत भाषा के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त होने वाले रोजगार के अवसर सरकारी निजी और सामाजिक सभी क्षेत्रों में मौजूद है।

व्यवसाय की संभावनाएं– संस्कृत विषय के क्षेत्र में करियर की भरपूर संभावनाएं हैं। संस्कृत मे अध्ययनरत छात्र बेहतरीन करियर बना सकते हैं। कर्मकाण्डों को कराने के अलावा संस्कृत भाषा के अनुवादक के रूप में भी काम किया जा सकता है। बड़े–बड़े मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर पूजारी का कार्य भी कर सकते हैं। इसके अलावा शासकीय नौकरियों में भी शास्त्री और आचार्यों की भर्ती की जाती है। सेना में भी संस्कृत की पढ़ाई करके सेवारत हो सकते हैं। संस्कृत पूरे देश में भाषायी तौर पर सबसे ज्यादा 15 विश्वविद्यालय संस्कृत भाषा से जुड़े है। भारत के कोने–कोने में बने इस विश्वविद्यालयों में लाखों की संख्या में छात्र संस्कृत पढ़ते और इस पर रिसर्च करते हैं। इसकी मुख्य वजह यह है कि एक ओर संस्कृत को विश्व की सबसे पुरानी भाषा होने का गौरव प्राप्त है, वहीं दूसरी ओर विज्ञान सम्मत व्याकरण होने से सर्वाधिक परिष्कृत भाषा होने का खिताब भी संस्कृत के नाम है। भारत से बाहर संस्कृत पूरी दुनिया के 250 से भी ज्यादा विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है।

विषय का उद्देश्य–

1. देश के विविध भागों में केन्द्रीय संस्कृत परिसरों की स्थापना, अधिग्रहण तथा संचालन करना।
2. संस्कृत विद्या की सभी विधाओं में शोध करना।
3. केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों का प्रबन्ध तथा उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में अधिकाधिक प्रभावी सहयोग करना।
4. देश भर में संस्कृत भाषा का व्यापक प्रचार–प्रसार करने में सहयोग करना।
5. संस्कृत भाषा के ज्ञान से स्वरोजगार प्राप्त करना।
6. संस्कृत का प्रचार–प्रसार करना और संस्कृत–सम्भाषण सिखाकर इसे फिर से व्यावहारिक भाषा बनाना। जब लोगों के मन में संस्कृत के प्रति प्रेम जागेगा तो संस्कृति के प्रति भी स्वभाविक प्रेम उत्पन्न होगा।

लक्ष्य– संस्कृत भाषा में लोगों की रुचि पैदा हो, संस्कृत की तरफ अधिक से अधिक विद्यार्थी आकर्षित हों, इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए अनेक कार्यक्रमों का संचालन करते रहना चाहिए। और संस्कृत में अध्ययनरत छात्रों को छात्रवृत्ति भी प्रदान की जानी चाहिए। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत संस्कृत के सुयोग्य छात्रों का चयन कर छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। संस्कृत एक प्राचीन भाषा है। इसमें ज्ञान का असीम भण्डार हैं। संस्कृत में हमारी सांस्कृतिक विरासत समाहित है। नैतिक व राष्ट्रीय मूल्य संस्कृत में विद्यमान है। अतएव छात्रों में मूल्य एवं सांस्कृतिक शिक्षा के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है।

मुख्य बिन्दु–सरल संस्कृत शिक्षण के माध्यम से संस्कृत का ज्ञान।

- **संस्कृत भाषा को व्यवहारपरक कैसे बनाएँ ?**
- **संस्कृत भाषायी कौशलों का विकास कैसे हो ?**
- **संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता कैसे विकसित करें ?**
- **संस्कृत के द्वारा नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें ?**
- **सरल संस्कृत में गद्य, पद्य का पठन।**

कोर्स की अवधी: ५ पांच दिन

- **सभी प्रतिभागियों को ई० सर्टिफिकेट दिया जायेगा ।**
- **इस कोर्स के लिए किसी भी तरह का कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा |**

पात्रता : कोई भी छात्र जो की इच्छुक हो

पंजीकरण का लिंक :- *https://forms.gle/MFrRyihgoKbrHapy8*

व्हाट्सएप्प ग्रुप आमंत्रण लिंक :*https://chat.whatsapp.com/DvfY7bZ1hFVFCcWWqQqCoK*,

डॉ0 प्रदीप कुमार
संस्कृत विभाग
डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल।